

स्टारलिनक उपग्रहों ने खोला पृथ्वी के ऊपरी वायुमंडल का 'छिपा राज', वैज्ञानिकों ने बनाया थर्मोस्फियर का अनोखा नक्शा



टोक्यो वैज्ञानिकों ने सैटेलाइटों की कक्षीय गति में आने वाली मामूली गिरावट का विश्लेषण कर करीब 500 किलोमीटर की ऊंचाई पर वायुमंडलीय घनत्व का अनोखा मानचित्र तैयार किया है। पृथ्वी के आसपास बढ़ती उपग्रहों और अंतरिक्ष मलबे की भीड़ के बीच वैज्ञानिकों ने ऊपरी वायुमंडल के एक बेहद महत्वपूर्ण, लेकिन अब तक काफी हद तक अदृश्य हिस्से को समझने का नया तरीका खोजा है।

जापान की क्योटो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने करीब 482 किलोमीटर की ऊंचाई पर मौजूद लगभग 1,200 स्टारलिनक उपग्रहों के कक्षीय बदलावों का विश्लेषण कर करीब 500 किलोमीटर ऊपर थर्मोस्फियर के वायुमंडलीय घनत्व का द्वि-आयामी मानचित्र तैयार किया है। खास बात यह है कि वैज्ञानिकों ने उपग्रहों की गति में आने वाली मामूली गिरावट को 'सुराग' की तरह इस्तेमाल किया। बेहद विरल होने के बावजूद थर्मोस्फियर उपग्रहों पर वायुमंडलीय घर्षण डालता है, जिससे उनकी कक्षाएं धीरे-धीरे बदल सकती हैं। ऐसे में इसके घनत्व की सटीक जानकारी उपग्रहों की गति और स्थिति का बेहतर अनुमान लगाने में मदद कर सकती है। शोधकर्ताओं के मुताबिक, यह अपनी तरह का पहला टोमोग्राफिक विश्लेषण है। भविष्य में यह तकनीक लगभग वास्तविक समय में ऊपरी वायुमंडल की निगरानी, अंतरिक्ष मौसम की बेहतर भविष्यवाणी और उपग्रहों व अंतरिक्ष मलबे के बीच टक्कर का जोखिम घटाने में मददगार हो सकती है। पृथ्वी के आसपास का अंतरिक्ष तेजी से भीड़भाड़ वाला होता जा रहा है। हजारों उपग्रहों के साथ अंतरिक्ष में मौजूद मलबे के टुकड़े भी पृथ्वी की निचली कक्षा में घूम रहे हैं। ऐसे में किसी उपग्रह की गति और दिशा में आने वाला छोटा-सा बदलाव भी महत्वपूर्ण हो सकता है। वैज्ञानिकों के मुताबिक महज कुछ सौ किलोमीटर ऊपर मौजूद बेहद विरल ऊपरी वायुमंडल भी उपग्रहों की गति को प्रभावित कर सकता है। यह उपग्रहों की गति में कमी ला सकता है और उनकी कक्षा को प्रभावित कर सकता है। इसलिए यह जानना बेहद जरूरी है कि अलग-अलग स्थानों पर ऊपरी वायुमंडल कितना घना है। इससे उपग्रहों की गति का सटीक अनुमान लगाने और अंतरिक्ष में टक्करों के खतरे को कम करने में मदद मिल सकती है। इसी चुनौती के बीच जापान की क्योटो यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने ऊपरी वायुमंडल के उस हिस्से को देखने और समझने का नया तरीका विकसित किया है, जिसका प्रत्यक्ष अवलोकन अब तक बेहद कठिन रहा है। (थर्मोस्फियर) का द्वि-आयामी मानचित्र तैयार किया है। बता दें कि टोमोग्राफी वही तकनीक है जिसका इस्तेमाल चिकित्सा क्षेत्र में शरीर के अंदर की तस्वीर बनाने के लिए किया जाता है। इसके लिए शोधकर्ताओं ने 482 किलोमीटर की ऊंचाई पर मौजूद करीब 1,200 स्टारलिनक उपग्रहों के कक्षीय बदलावों का अध्ययन किया। शोधकर्ताओं ने स्टारलिनक उपग्रहों की कक्षीय गति में होने वाले बदलावों को पढ़कर यह अनुमान लगाया कि अलग-अलग स्थानों पर थर्मोस्फियर कितना घना है। इस जानकारी की मदद से वैज्ञानिकों ने करीब 500 किलोमीटर की ऊंचाई पर वायुमंडल के घनत्व का अक्षांश-देशांतर आधारित मानचित्र तैयार किया। शोधकर्ताओं के अनुसार, यह अपनी तरह का पहला टोमोग्राफिक विश्लेषण है। थर्मोस्फियर पृथ्वी की सतह से करीब 100 से 1,000 किलोमीटर की ऊंचाई तक फैला ऊपरी वायुमंडल का एक क्षेत्र है। ऊपरी वायुमंडल का 99 फीसदी से अधिक हिस्सा विद्युत रूप से तटस्थ गैसों का है, जबकि एक फीसदी से भी कम गैसों आयनित अवस्था में हैं। इसी क्षेत्र में उपग्रहों की कक्षाएं भी होती हैं। यहां

वायुमंडल इतना विरल है कि इंसान को इसका कोई प्रत्यक्ष एहसास नहीं होता। फिर भी यह उपग्रहों की गति को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त है। जब उपग्रह इस बेहद पतली गैस से गुजरते हैं तो उन पर थोड़ा-सा वायुमंडलीय घर्षण लगता है। इससे उनकी कक्षाएं धीरे-धीरे बदल सकती हैं। यही वजह है कि उपग्रहों की कक्षाओं और अंतरिक्ष अभियानों को सुरक्षित रखने के लिए इसकी घनत्व संबंधी जानकारी बेहद मायने रखती है।

यह अध्ययन शोधकर्ताओं के पिछले काम का अगला चरण है। इससे पहले उन्होंने स्टारलिनक के कक्षीय आंकड़ों की मदद से यह पता लगाया था कि थर्मोस्फियर का घनत्व समय और ऊंचाई के साथ कैसे बदलता है। इस बार शोध को एक कदम आगे बढ़ाते हुए वैज्ञानिकों ने यह जानने की कोशिश की कि एक ही ऊंचाई पर अलग-अलग अक्षांश और देशांतर में वायुमंडलीय घनत्व कैसा है।

यानी अब केवल यह नहीं पता चलता कि थर्मोस्फियर कब और कितनी ऊंचाई पर बदलता है, बल्कि यह भी देखा जा सकता है कि पृथ्वी के किस हिस्से के ऊपर यह कितना घना है। देखा जाए तो इस खोज का महत्व केवल वैज्ञानिक अध्ययन तक सीमित नहीं है। पृथ्वी की कक्षा में उपग्रहों की संख्या लगातार बढ़ रही है और इसके साथ अंतरिक्ष मलबे से टकराव का खतरा भी बढ़ रहा है।

ऐसे में थर्मोस्फियर का घनत्व सही तरीके से पता होने पर वैज्ञानिक यह बेहतर ढंग से अनुमान लगा सकते हैं कि वायुमंडलीय घर्षण के कारण किसी उपग्रह की कक्षा में कितना बदलाव आएगा। इससे उपग्रहों की गति और स्थिति का अधिक सटीक अनुमान लगाया जा सकता है और संभावित टकरावों को टालने में मदद मिल सकती है। भविष्य में यह तकनीक उपग्रहों के आसपास वायुमंडलीय घनत्व की लगभग वास्तविक समय में निगरानी करने में भी उपयोगी हो सकती है। इससे अंतरिक्ष के मौसम की भविष्यवाणी बेहतर होने और अंतरिक्ष अभियानों को अधिक सुरक्षित एवं भरोसेमंद बनाने की उम्मीद है। वैज्ञानिकों ने यह भी स्पष्ट किया है कि यह तकनीक अभी शुरुआती चरण में है और इससे मिलने वाला नक्शा बहुत उच्च रिजॉल्यूशन का नहीं है। फिलहाल यह तकनीक थर्मोस्फियर में बड़े और रोजाना होने वाले बदलावों को बेहतर ढंग से पकड़ सकती है, लेकिन बहुत छोटे और तेजी से होने वाले बदलावों को पकड़ने की क्षमता सीमित है। इसके अलावा, स्टारलिनक उपग्रह करीब 53 डिग्री झुकाव वाली कक्षाओं में घूमते हैं। इसलिए पृथ्वी के ऊंचे अक्षांश वाले क्षेत्रों में आंकड़ों की उपलब्धता सीमित रहती है। भविष्य में अलग-अलग ऊंचाइयों और कक्षीय झुकाव वाले अन्य उपग्रहों के आंकड़े जोड़कर इस कमी को दूर किया जा सकता है। फिर भी इस अध्ययन ने एक महत्वपूर्ण संभावना सामने रखी है, जो उपग्रह अब तक केवल अंतरिक्ष में संचार और दूसरी सेवाओं के लिए देखे जाते थे, वे पृथ्वी के अदृश्य ऊपरी वायुमंडल को समझने के लिए भी हजारों चलते-फिरते सेंसर की तरह काम कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने दोहराया प्रदेश की हर बहन की खुशहाली का संकल्प



भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को रक्षाबंधन के पावन पर्व पर ग्वालियर की लाड़ली बहनों ने स्नेह और विश्वास से भरी राखियाँ बांधी। इन राखियों के पवित्र धागों ने जहाँ भाई-बहन के आत्मीय रिश्ते को सुदृढ़ किया।

वहीं प्रदेश की हर बहन के सम्मान, सुरक्षा, स्वावलंबन और खुशहाली के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव के संकल्प को और मजबूत किया। रक्षाबंधन के उपहार स्वरूप लाड़ली बहना योजना के तहत अतिरिक्त धनराशि देने के लिए ग्वालियर की लाड़ली बहनों ने मुख्यमंत्री को धन्यवाद पत्र भी भेंट किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को ग्वालियर विमानतल पर तैनात सीआईएसएफ की दो महिला सुरक्षा कर्मियों ने राखियाँ बांधीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के ललाट पर लाड़ली बहनों ने रोली का तिलक लगाकर राखी बांधी मुख्यमंत्री ने सभी बहनों को स्नेहपूर्वक आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि बहन और भाई का रिश्ता केवल एक पर्व तक सीमित नहीं है, यह जीवनभर के स्नेह, विश्वास और जिम्मेदारी का रिश्ता है। राखी का यह पवित्र धागा हमें

निरंतर याद दिलाता रहेगा कि मध्यप्रदेश की प्रत्येक बहन उनके परिवार का हिस्सा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की हर बहन के चेहरे पर मुस्कान हो, बेटियाँ सुरक्षित रहें, आत्मनिर्भर बनें और अपने सपनों को पूरा करते हुए आगे बढ़ें, इसके लिए प्रदेश सरकार पूरी संवेदनशीलता के साथ काम कर रही है। एयर टर्मिनल पर तैनात महाराष्ट्र निवासी सुश्री रासकर अश्विनी और राजस्थान निवासी सुश्री पूनम यादव इस बार रक्षाबंधन पर अपने घर नहीं जा पा रही हैं। अपनों से दूर होने की कसक उनके मन में थी, लेकिन मुख्यमंत्री की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधते ही उनकी आंखें नम हो गईं। दोनों ने भावुक होकर कहा मुख्यमंत्री ने रक्षाबंधन पर्व पर हमें भाई की कमी महसूस नहीं होने दी। लाड़ली बहनों के विश्वास और मुख्यमंत्री की आत्मीयता से रक्षाबंधन का यह अवसर स्नेहिल भावनाओं से भर उठा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को भिंड जिले के मालनपुर औद्योगिक क्षेत्र में गोदरेज की चौथी यूनिट का शुभारंभ करने आए थे। इसी सिलसिले में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ट्रांजिट विजिट पर विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर और पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल के साथ ग्वालियर स्थित राजमाता विजयाराजे सिंधिया एयर टर्मिनल पहुंचे थे। इस अवसर पर कुक्कुट विकास निगम के अध्यक्ष श्री केशव सिंह बघेल, जीडीए के अध्यक्ष श्री मधुसूदन सिंह भदौरिया, महर्षि पतंजलि बोर्ड के अध्यक्ष श्री कौशल शर्मा, नगर निगम सभापति श्री मनोज तोमर सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

जल त्रासदी ने पूरे नेपाल को हिलाकर रख दिया

नेपाल जल त्रासदी ने पूरे नेपाल को हिलाकर रख दिया है। इसके चलते भोटे कोशी और त्रिशूली नदी में आए सैलाब ने चंद मिनट में ही कई गांव अपने चपेट में ले लिए। प्रकृति का इतना भयावह रौद्र रूप पहली बार नेपाल में देखा गया। कई गांव तेज बहाव में पूरी तरह लापता हो गए। इसी के साथ 40 से अधिक स्थायी पुल और तिब्बत सीमा पर बने बीजा जांच के नंद भी लापता हो गए। वहीं हजारों वाहन भी इस बहाव में बह गए। अभी तक 200 लोगों के मरने की पुष्टि की गई है।



कमजोर देशों में धूम्रपान छोड़ना भी मुश्किल, स्वास्थ्य सेवाएं नहीं दे पा रही 130 करोड़ लोगों को जरूरी मदद



नई दिल्ली। धूम्रपान की लत छोड़ना सिर्फ इच्छाशक्ति का सवाल नहीं। कई लोगों के लिए यह ऐसी जंग है, जिसमें वे बार-बार कोशिश करते हैं, लेकिन अकेले लड़ते-लड़ते हार जाते हैं। उन्हें डॉक्टर की सलाह, नियमित परामर्श और जरूरत पड़ने पर दवाओं की मदद चाहिए। लेकिन विडम्बना यह है कि दुनिया के करोड़ों धूम्रपान करने वालों के पास यह मदद पहुंच ही नहीं रही। एक नए अध्ययन ने वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था की इसी बड़ी खामी को उजागर किया है।

शोधकर्ताओं के मुताबिक, करीब 130 करोड़ लोगों को धूम्रपान छोड़ने के लिए जरूरी और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं। यह तब है जब दुनिया में तंबाकू हर साल 70 लाख से ज्यादा लोगों की जान ले रही है, फिर भी इसे छोड़ने में मदद करने वाली सेवाएं अधिकांश जरूरतमंदों की पहुंच से बाहर हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ यॉर्क, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय और हार्वर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पाया है कि दुनिया में तंबाकू का सेवन करने वाले 80 फीसदी से अधिक लोग विकासशील देशों में रह रहे हैं। इन देशों में पहले ही स्वास्थ्य समस्याओं का भारी बोझ है, लेकिन धूम्रपान की लत से बाहर निकलने में लोगों की मदद करने वाली व्यवस्था सबसे कमजोर है। लैंसेट में छपे एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में धूम्रपान के कारण हर साल 10 लाख लोगों की मौत हो रही है। इतना ही नहीं इस आंकड़े में पिछले तीन दशकों में 58.9 फीसदी का इजाफा हुआ है। फोटो-सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई)

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भी खुलासा किया है कि जिस उम्र में बच्चों के हाथों में किताबें और आंखों में सपने होने चाहिए, उस उम्र में दुनिया भर के करीब 4 करोड़ किशोर तंबाकू और निकोटिन की गिरफ्त में फंस चुके हैं। संगठन ने चेताया है कि तंबाकू उद्योग अब अगली पीढ़ी को अपना नया बाजार बनाने में जुटा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मुताबिक दुनिया भर में

130 करोड़ लोग किसी न किसी रूप में तंबाकू का सेवन कर रहे हैं। इनमें से 80 फीसदी निम्न और मध्यम आय वाले देशों में रह रहे हैं। भारत की बात करें तो अपना देश दुनिया में तंबाकू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है। ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे इंडिया, 2016-17 के मुताबिक देश में 29 फीसदी वयस्क (करीब 26.7 करोड़ लोग) तंबाकू का सेवन करते हैं। इसमें खैनी, गुटखा, सुपारी, जर्दा, बीड़ी, सिगरेट और हुक्का जैसे उत्पाद शामिल हैं।

लैंसेट में छपे एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में धूम्रपान के कारण हर साल 10 लाख लोगों की मौत हो रही है। इतना ही नहीं इस आंकड़े में पिछले तीन दशकों में 58.9 फीसदी का इजाफा हुआ है। अध्ययन के मुताबिक हालांकि कई देशों में सरकारें धूम्रपान छोड़ने के लिए मदद उपलब्ध होने का दावा करती हैं। लेकिन जब शोधकर्ताओं ने वास्तविक व्यवस्था और लोगों तक सुविधाओं की पहुंच को देखा, तो तस्वीर काफी निराशाजनक मिली। लैंसेट में छपे एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में धूम्रपान के कारण हर साल 10 लाख लोगों की मौत हो रही है। इतना ही नहीं इस आंकड़े में पिछले तीन दशकों में 58.9 फीसदी का इजाफा हुआ है। फोटो-सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई)

शोधकर्ताओं ने पाया कि महज 13 निम्न आय वाले देशों में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सुझाए मानकों के अनुरूप व्यापक सहायता उपलब्ध है। इसमें डॉक्टर या स्वास्थ्यकर्मी से व्यवहार संबंधी

परामर्श और जरूरत के अनुसार मुफ्त या सब्सिडी वाली दवाएं शामिल हैं। देखा जाए तो दुनिया के करोड़ों लोग ऐसी लत से जूझ रहे हैं, जो उनके शरीर और दिमाग दोनों को जकड़ लेती है, लेकिन उससे बाहर निकलने के लिए उन्हें जरूरी पेशेवर मदद तक नहीं मिल पाती। ऐसे में अकेले दम पर धूम्रपान छोड़ने की कोशिश करना बेहद मुश्किल हो जाता है और बार-बार कोशिश के बावजूद दोबारा उसी लत में लौट जाना उनकी कमजोरी नहीं, बल्कि मदद की कमी का नतीजा बन जाता है।

भारत और वियतनाम समेत कई देशों का अध्ययन करने वाले शोधकर्ताओं ने पाया कि धूम्रपान छोड़ने वाली सेवाओं तक पहुंच कई स्थानीय परिस्थितियों से प्रभावित होती है। सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएं, सरकारी नीतियां, स्वास्थ्य सेवाओं के लिए धन की कमी और तंबाकू उद्योग का प्रभाव लोगों तक उपचार पहुंचने में बाधा बन सकते हैं।

इसलिए विशेषज्ञों का कहना है कि हर देश में एक जैसी योजना लागू करने के बजाय वहां की सामाजिक और स्वास्थ्य व्यवस्था के मुताबिक कार्यक्रम तैयार किए जाने चाहिए। तंबाकू और शराब

लैंसेट में छपे एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में धूम्रपान के कारण हर साल 10 लाख लोगों की मौत हो रही है। इतना ही नहीं इस आंकड़े में पिछले तीन दशकों में 58.9 फीसदी का इजाफा हुआ है। फोटो-सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई)

यूनिवर्सिटी ऑफ यॉर्क और अध्ययन से जुड़े शोधकर्ता प्रोफेसर कामरान सिद्दीकी के मुताबिक, तंबाकू की लत से जूझ रहे लोगों का इलाज करना स्वास्थ्य सेवाओं की बुनियादी जिम्मेदारी है। उनका कहना है कि धूम्रपान छोड़ने वाली सेवाएं अपेक्षाकृत कम लागत में स्वास्थ्य व्यवस्था का हिस्सा बनाई जा सकती हैं और इससे लोगों के स्वास्थ्य के साथ उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो सकता है। न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने ऐसे कई

उपाय बताए हैं, जिनसे सीमित संसाधनों वाले देशों में भी ज्यादा लोगों तक मदद पहुंचाई जा सकती है। नेशनल क्रिटलाइन और मोबाइल हेल्थ ऐप के जरिए लोगों को दूर से परामर्श दिया जा सकता है।

इसी तरह ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता लोगों को धूम्रपान छोड़ने की प्रक्रिया में मार्गदर्शन दे सकते हैं।

डॉक्टरों द्वारा सामान्य जांच के दौरान ही मरीज से उसके तंबाकू सेवन के बारे में पूछना, उसे धूम्रपान छोड़ने की सलाह देना और फिर सीधे उपचार से जोड़ना भी प्रभावी तरीका हो सकता है। इसे 'आस्क-एडवाइज-कनेक्ट' मॉडल कहा जाता है। विशेषज्ञों ने निकोटिन पैच, साइटिसिन और वेरेनिकलीन जैसी प्रमाणित धूम्रपान-रोधी दवाओं को ज्यादा देशों में उपलब्ध कराने की जरूरत बताई है। उनका कहना है कि ये उपचार किफायती हैं, लेकिन कई जगह इनकी कीमत या उपलब्धता लोगों के लिए बड़ी बाधा बन जाती है।

लैंसेट में छपे एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में धूम्रपान के कारण हर साल 10 लाख लोगों की मौत हो रही है। इतना ही नहीं इस आंकड़े में पिछले तीन दशकों में 58.9 फीसदी का इजाफा हुआ है। फोटो-सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई)

शोधकर्ताओं के अनुसार, सरकारों और बीमा कंपनियों को इन दवाओं के पूरे उपचार-कोर्स का खर्च उठाना चाहिए। किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति यह तय नहीं करे कि वह तंबाकू की लत से बाहर निकल पाएगा या नहीं।

न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डोना शेली का इस बारे में प्रेस विज्ञप्ति में कहना है, धूम्रपान छोड़ने के लिए व्यापक और समान स्वास्थ्य सहायता को सामान्य चिकित्सा सेवा का हिस्सा बनाना बेहद जरूरी है। ऐसा करके दुनिया भर में तंबाकू से होने वाली लाखों मौतों को रोका जा सकता है।

इस अध्ययन का सबसे बड़ा संदेश यही है कि धूम्रपान करने वाले व्यक्ति को केवल उसकी आदत के लिए दोषी ठहराना समाधान नहीं है। कई लोग इस लत को छोड़ना चाहते हैं, लेकिन उन्हें रास्ता दिखाने वाला डॉक्टर, साथ देने वाला स्वास्थ्यकर्मी या जरूरी दवा नहीं मिलती। लैंसेट में छपे एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में धूम्रपान के कारण हर साल 10 लाख लोगों की मौत हो रही है। इतना ही नहीं इस आंकड़े में पिछले तीन दशकों में 58.9 फीसदी का इजाफा हुआ है।

प्रदेश में निवेशकों का अभूतपूर्व निवेश मेड इन एमपी, फेथ इन एमपी का उत्कृष्ट उदाहरण

इंदौर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश देश का दिल तो है ही, अब देश-विदेश के उद्योगपतियों और निवेशकों के दिलों में भी बसता है। प्रसिद्ध औद्योगिक प्रक्षेत्र मालनपुर में गोदरेज की चौथी नई एकीकृत विनिर्माण इकाई का शुभारंभ उद्योग जगत के मध्यप्रदेश पर दिनों-दिन बढ़ते विश्वास का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि चम्बल अब तेजी से बदल रहा है। प्रदेश में हो रही औद्योगिक प्रगति में चम्बल अपने इतिहास को पीछे छोड़कर अब पूरी क्षमता से अपनी एक नई पहचान बना रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को भिंड जिले के औद्योगिक क्षेत्र मालनपुर में गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड की चौथी नवीन एकीकृत औद्योगिक (विनिर्माण) इकाई का शुभारंभ किया। गोदरेज ग्रुप द्वारा लगभग 450 करोड़ रुपये के अतिरिक्त निवेश से स्थापित यह इकाई मध्यप्रदेश में बढ़ते औद्योगिक विश्वास और ग्वालियर-चंबल अंचल में बदलते निवेश परिदृश्य का महत्वपूर्ण प्रतीक है। गोदरेज की इस चौथी नई एकीकृत विनिर्माण इकाई में 600 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने क्षेत्र के बदलते स्वरूप के बारे में कहा कि चंबल की भूमि बेहद उपजाऊ है। आज लगातार यहां नई-नई औद्योगिक इकाइयां लग रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि गोदरेज ने लगभग तीन दशक पहले मालनपुर में पहली इकाई स्थापित करते समय चुनौतियों के बजाय संभावनाओं को देखा। आपने बीहड़ नहीं, भविष्य देखा। चुनौती नहीं, संभावना देखी। उन्होंने कहा कि गोदरेज का यह 450 करोड़ रुपये का निवेश 'मेड इन एमपी' और 'फेथ इन एमपी' का उत्कृष्ट



उदाहरण है। मालनपुर अब ग्वालियर-चंबल के औद्योगिक विकास का कैटेलिस्ट बन रहा है। यहां टॉय से लेकर टायर तक के उद्योग विकसित हो रहे हैं। एलेक्सर इंडस्ट्रीज द्वारा 1500 करोड़ रुपये का निवेश, गौतम सोलर की सोलर सेल निर्माण इकाई तथा मवई में ग्लास मैनुफैक्चरिंग इकाई सहित अनेक परियोजनाएं क्षेत्र के औद्योगिक विस्तार को गति दे रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प में मैनुफैक्चरिंग महत्वपूर्ण शक्ति है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में पिछले ढाई वर्षों में मिले निवेश प्रस्तावों में से 30 प्रतिशत से अधिक निवेश धरातल पर उतर चुका है। राज्य में उत्पादित करीब 76 हजार करोड़ रुपए के उत्पाद/कंज्यूमर प्रोडक्ट्स अब सात समंदर पार निर्यात किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज हमारा मध्यप्रदेश देश का सबसे तेज गति से औद्योगिक प्रगति हासिल करने वाला राज्य बन गया है। मध्यप्रदेश की बेरोजगारी दर पूरे देश में सबसे कम है। मुख्यमंत्री ने उद्योगपतियों और निवेशकों को जनवरी 2027 में भोपाल में होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के लिए आमंत्रित करते हुए कहा कि आइए, मप्र में उद्योग लगाइए और अपना बिजनेस भी बढ़ाइए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में गोदरेज का सफर राज्य की औद्योगिक

विकास के लिए प्रतिबद्धता और उद्योगों के साथ स्थायी पार्टनरशिप का प्रमाण है। वर्ष 1991 में मालनपुर में अपनी पहली इकाई की स्थापना से लेकर आज अपने विस्तारित मैनुफैक्चरिंग हब के उद्घाटन तक गोदरेज कंपनी ने लगातार मध्यप्रदेश में रोजगार निर्माण, औद्योगिक विकास और आर्थिक वृद्धि में अपना योगदान दिया है। आज के शुभारंभ से मालनपुर को एशिया की सबसे बड़ी इंटिग्रेटेड सोप मैनुफैक्चरिंग फैक्ट्री का गौरव हासिल हो गया है। प्लांट के कर्मचारियों में महिलाओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। समृद्ध, आत्मनिर्भर और विकसित मध्यप्रदेश की दिशा में इस पार्टनरशिप को और अधिक मजबूत करने में यह इकाई महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश और मध्यप्रदेश बदल रहा है। यहां लगातार औद्योगिक निवेश आने और फैक्ट्रियों के लोकार्पण एवं भूमि-पूजन का क्रम जारी है। ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में पिछले करीब दो महीने में आज तीसरी औद्योगिक इकाई का शुभारंभ

हो रहा है। पहले गुना में लगभग 1500 करोड़ के निवेश से सीमेंट प्लांट, शिवपुरी में डिफेंस सेक्टर के मैनुफैक्चरिंग प्लांट और आज मालनपुर में 450 करोड़ के निवेश से गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स की नई यूनिट का शुभारंभ हुआ है। विभिन्न इंडस्ट्री कॉन्क्लेव में हमारी सरकार ने औद्योगिक समूहों के साथ एमओयू किए हैं, जो आज मूर्तरूप ले रहे हैं। एशिया की सबसे बड़ी साबुन फैक्ट्री अब मालनपुर में है, यहां प्रति मिनट 4000 साबुन तैयार हो सकते हैं। गोदरेज समूह ने प्रतिबद्धता के बल पर दुनिया में अपनी अलग साख और थाक बनाई है। औद्योगिक घरानों के प्रयासों से कई घरों में आर्थिक समृद्धि और विकास की नई रौशनी आती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भिंड जिले में बहुत जल्द 1500 करोड़ के निवेश से बन रही औद्योगिक इकाई का लोकार्पण किया जाएगा। मध्यप्रदेश युवाओं की समृद्धि और उन्हें रोजगार उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

भोपाल में पिछले साल हुई ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस 2025) में 30.77 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले थे। इनमें से 30 प्रतिशत धरातल पर उतर चुके हैं और करीब 10 लाख करोड़ रुपए की औद्योगिक इकाइयां मूर्तरूप ले रही हैं। कई फैक्ट्रियों ने अपना उत्पादन भी शुरू कर दिया है। मध्यप्रदेश की विदेशी निर्यात क्षमता बढ़कर अब 76 हजार करोड़ हो चुकी है। मध्यप्रदेश

की सीमाओं पर कोई समुद्र नहीं है, लेकिन हमारे उत्पाद सात समंदर पार दूर देशों तक पहुंच रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल में जीआईएस से पहले हमारी सरकार ने रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव कर प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों में औद्योगिक विकास की संभावनाएं तलाशी थीं। इसी आधार पर ग्वालियर में टेलीकॉम सेक्टर की सबसे बड़ी यूनिट स्थापित की जाएगी। यहां टेलीकॉम मैनुफैक्चरिंग जोन (टीएमजेड) के माध्यम से ग्वालियर अंचल बदलेगा। चंबल बेल्ट में कभी दस्यु समस्या थी, लेकिन अब ग्वालियर-चंबल क्षेत्र निवेश, उद्योग और रोजगार के लिए अपनी पहचान बना रहा है। आशा है कि गोदरेज समूह मालनपुर में अपनी पांचवीं यूनिट भी जल्द शुरू करेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गोदरेज समूह को भिंड जिले में स्थानीय स्तर पर कर्मचारियों के कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत करनी चाहिए। हमारी सरकार मध्यप्रदेश को देश का अग्रणी राज्य बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। राज्य में तेजी से आ रहे निवेश से हमारे युवाओं को रोजगार के नये अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

गोदरेज ग्रुप की एग्जिक्यूटिव चेयरपर्सन सुश्री निसाबा गोदरेज ने कहा कि इस विस्तार के बाद अब एशिया की सबसे बड़ी सोप मैनुफैक्चरिंग सुविधा मालनपुर में है। इस प्लांट में हर मिनट 4,000 तक सोप बार बना सकते हैं। यह अत्याधुनिक प्लांट गोदरेज और मध्यप्रदेश के बीच 35 सालों की पार्टनरशिप प्रदर्शित करता है, जो 1991 में मालनपुर में हमारे पहले मैनुफैक्चरिंग प्लांट के साथ शुरू हुई थी।